राज
कॉमिक्स
संख्या 0102
भूतों का खजाना
-बेदी

# भूतों का खजाना

चित्रांकन: बेदी
कहानी: तरुणकुमार वाही
संपादन: मनीषचंद्र गुप्त

किसी गांव में दो मित्र रहते थे। दोनों में अटूट दोस्ती थी। एक का नाम छोटे और दूसरे का नाम मोटे था।

लेकिन उनमें एक सबसे बड़ी कमी थी और वह थी झूठ न बर्दाश्त करने की और सच को न छिपाने की। उनकी इस कमी के कारण गांव के बहुत से लोग उनसे बेहद परेशान व क्रोधित थे—

दोनों का ही इस दुनिया में एक-दूसरे के अलावा कोई न था। अत: दोनों में भाइयों का सा स्नेह था।

दोनों मिल-जुलकर ही अपने कार्य सम्पन्न कर लेते थे।

दोनों अक्ल के भी कच्चे थे थोड़े से। कौन सी बात कहां छिपानी चाहिए, कहां कहनी चाहिये, इस बात पर उन्होंने कभी गौर नहीं किया था।

इसी प्रकार उनके दिन सुख-चैन से बीत रहे थे। और एक दिन जब मोटे आटा-दाल खरीदने लाला की दुकान पर पहुंचा-
अरे! यह मैं क्या देख रहा हूं? लाला का नौकर मिलावटी आटे में लकड़ी का बुरादा मिला रहा है! हुंअ...

वह दृश्य देखने के पश्चात वह लाला की दुकान पर पहुंचा, जो कि उस गोदाम के ठीक पीछे थी-
लाला जी! राम-राम!
राम-राम मोटे भैया! आओ भाई, हैं भई, हैं, जल्दी से क्या सामान चाहिये उसकी सूची मुझे दे दो, मैं अभी सारा सामान निकलवा देता हूं।

यह मुसीबत जितनी जल्दी दूर हो जाये, उतना ही अच्छा।
अबे मिलावटी...कहां मर गया रे...
आया हुजूर!

अधिक कुछ नहीं लाला जी! बस, एक पाव दाल और दो सेर आटा चाहिये।
हैं भई, हैं, सुना तूने मिलावटी! चल, जल्दी से मोटे भैया को आटा-दाल तोल दे।
जी लालाजी!
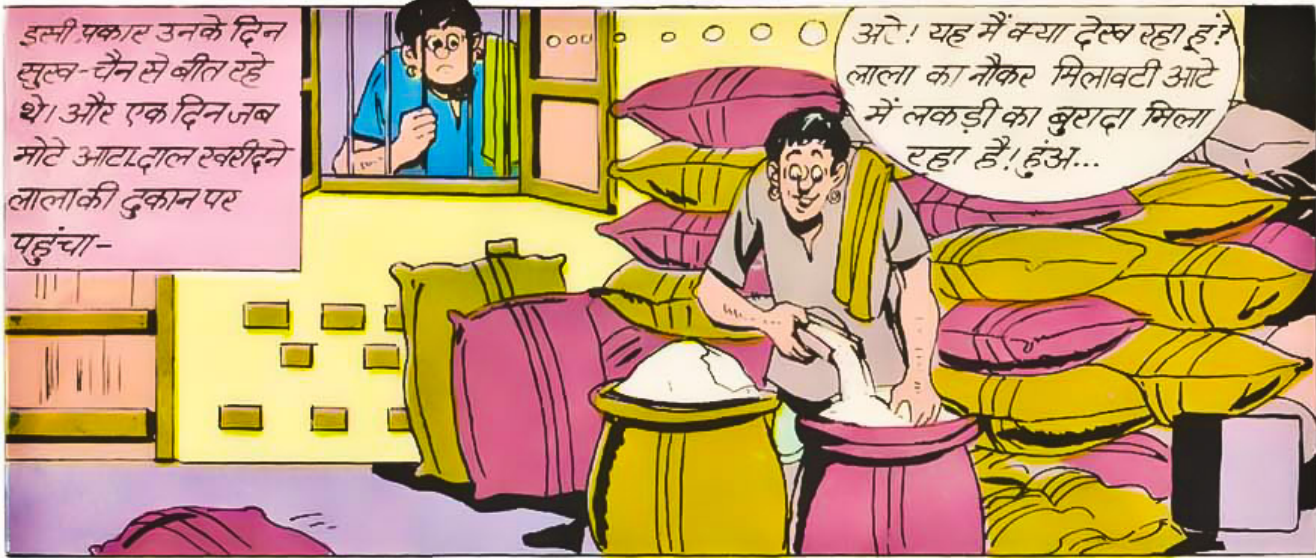
और जब मिलावटी ने उसी आटे की बोरी में से आटा तोलना चाहा, जिसमें मोटे पहले ही उसे मिलावट करते देख चुका था–
ठहरिये लाला जी, मुझे उस बोरी का आटा नहीं चाहिये।
हैं भई हैं! क्यों नहीं चाहिए जी। उस बोरी के आटे में जहर मिला है क्या?
?
जहर तो नहीं, लेकिन लकड़ी का बुरादा जरूर मिला है। मैंने अपनी आंखों से तुम्हारे नौकर मिलावटी को आटे में बुरादा मिलाते...
अरे... चुप हो जा... चुप हो जा कम्बख्त! क्यों मेरी दुकान की लुटिया डुबोने पर तुला है।
ज... ज... जी।
अबे ओ मिलावटी! इसे असली आटा दे दे वरना ये यहां खड़ा-खड़ा मेरा दिवाला निकाल देगा।
यह रहा आपका सामान मोटे भैया।
बहुत अच्छा। और ये रही आटे-दाल की कीमत
तभी-
लाला जी! दस सेर आटा देना।
अभी लो!
?

ठहरो भाई, इस बोरी का आटा मत लो। इसमें लाला के नौकर को मैंने लकड़ी का बुरादा मिलाते देखा है।
क्या? हुम्म, तभी कल सुबह से ही मेरे पेट में बवंडर सा उठा हुआ है।

अगले ही पल—
क्यों रे लाला! कितनी मिलावट की है रे तूने आटे में?
हैं भई हैं, म...म... कु...कुछ नहीं... तुम्हारे सिर की कसम...

ऐसा क्या? तो फिर ले यह घूंसा खा... झूठ बोलने का कड़वा फल।
हाऽऽऽय मर गया।

और यह मेरे सिर की झूठी कसम खाने की शुद्ध देसी घी की पटखनी।
?
हाय ऽऽऽ मर गया।

बू हू हू हू! हैं भई हैं, बुरा हो उस कम्बख्त मोटे का। हाय, मेरा जबड़ा सूजकर आलू बुखारा हो रहा है।
इस समय मुझे लालाजी की शक्ल ऐसी दिखाई पड़ रही है, मानो चिड़ियाघर से कोई जानवर भागा हो।

उधर गांव में जिस समय छोटे बेचैनी से मोटे की प्रतीक्षा कर रहा था तभी–
अरी भाग्यवान, जल्दी कर! सारा सामान बांध ले। हमें आज संध्या घिरते ही यह किराये का मकान खाली करना है...
?!

...उस कम्बख्त महाजन चुन्नीलाल का बहुत कर्जा चढ़ गया है हम पर। वह कल सुबह ही आ धमकने की धमकी दे गया है...

...कल मकान मालिक भी अपना किराया वसूल करने आ धमकेगा। और लाला तो हमें जिन्दा ही नहीं छोड़ेगा। अगर उसके तीन महीने के भाषण... मेरा मतलब राशन का पैसा न दिया तो...

...इन सबका एक ही हल है। गांव से नौ दो ग्यारह होना। वैसे उन सब से मैंने कल तक सारा हिसाब-किताब साफ कर देने का झूठा वायदा कर दिया है।
झूठा वायदा?

झूठ के नाम पर छोटे के कान खड़े हो गए–
हुम्म! तो तेजतर्रारसिंह झूठ बोलकर गांव के बहुत से लोगों को मूर्ख बनाने के चक्कर में है। लेकिन मैं ऐसा हर्गिज नहीं होने दूंगा। झूठे का मुंह काला होकर रहेगा।

महाजन... मकान मालिक... और लाला को खबर देने से पहले मैं अपने इस पाजी व मक्कार पड़ोसी के घर के दरवाजे पर सांकल तो चढ़ा ही दूं ताकि ये भाग न सके।
सांकल चढ़ाने के पश्चात वह शीघ्र ही महाजन चुन्नीलाल के घर जा पहुंचा और–
जल्दी कीजिये चुन्नीलाल जी! मेरा पड़ोसी और आपका कर्जदार तेजतर्रारसिंह इस गांव से दुड़की होने की फिराक में है ताकि वह आपका कर्जा चुकाने से बचा रहे।
क्या?


उस बदमाश की इतनी हिम्मत? मैं उस लफंगे को जीवित नहीं छोड़ूंगा। भुर्ता बना डालूंगा। उसका, ब्याज काट के...
अरे धीरू, भीरू, भीखा... जल्दी आओ। ब्याज काट के...


क्या बात है सेठ जी?
इसी वक्त चलो मेरे साथ। उस कम्बख्त तेजतर्रारसिंह की तेजी निकालनी है। हुंअ, मेरा रुपया मारकर गांव से फरार हो रहा है। देखता हूं कैसे होता है। ब्याज काट के...


यह बात है तो चलिये। जरा हम भी तो देखें कि कितनी तेजी है उसमें।
आओ!

यह तो उसकी जान ही लेलेगा। फौरन चलकर तेज तर्रारसिंह को खबर करनी चाहिये। आखिर पड़ोसी होने के नाते मेरा यह कर्तव्य बनता है।

लेकिन उसके पहुंचने से पहले ही धीरू, भीरू, भीखा के साथ महाजन तेज तर्रार सिंह के घर पहुंच गया।
दरवाजा खोलो
खट खट खट
आंय! इस समय अब कौन आ मरा! कहीं महाजन, मकान मालिक या लाला में से ही तो कोई नहीं होगा!

तेजतर्रारसिंह ने दरवाजा खोला। और फिर सामने महाजन को देखते ही वह उछलकर कई कदम पीछे हट गया-
म... महाजन?
हां... मैं ही हूं। हुम्म! पूरी तैयारी है। छोटे ठीक ही कहता था। ब्याज काटके...

छोटे???

अच्छा हुआ जो सही वक्त पर तुम्हारी पोल खुल गई। अब देखता हूं कि तुम मेरा पैसा हजम करके कैसे गांव छोड़कर भागते हो। ब्याज काट के...
...धीरू, भीरू ...भीखा! उठा लो यह सारा सामान...

...और मेरे घर पहुंचा दो। साथ ही इसे एक छोटा सा सबक भी सिखा दो कि महाजन चुन्नीलाल से हेरा-फेरी करने का क्या परिणाम निकल सकता है। ब्याज काटके...
जो हुक्म सेठ जी!

तीनों बदमाश यमदूत की तरह तेजतर्रारसिंह की ओर बढ़े। उन तीनों को भयानक रूप में अपनी ओर बढ़ते देखकर तेजा भय से चीख उठा—
ब...ब...बचाओ!
??
अब तो तुम्हें हमारे हाथों कोई बचाने आने से रहा। हे हे हे!
पिटने के लिए तैयार हो जा।
निकाल दो पाजी की सारी तेजी।
अगले ही पल वे उस पर कहर बनकर टूट पड़े—
धड़ाक
सड़ाक
आ...ह! बचाओ!
फिर सारा सामान उठाने के पश्चात वे लोग वहां से चले गए और पीछे रह गया जगह-जगह से उधड़ा हुआ तेजतर्रारसिंह—
हाऽऽय? मर गया!
हे भगवान! कम्बख्तों ने मार-मार कर पिलपिला खरबूजा बना दिया है। आग लगे नासपीटों को। कीड़े पड़ें...ॠ हू हू हू!
यह सारी कारस्तानी उस पाजी, सत्यवादी की औलाद छोटे की है। उसी ने ही जाकर महाजन को पट्टी पढ़ाई होगी। मैं उस कम्बख्त की हड्डी-पसली एक कर दूंगा। नहीं छोड़ूंगा उसे...गुर्र र र!

तेजतर्रारसिंह उसी वक्त अपना पुश्तैनी लट्ठ उठाकर छोटे की खोज में निकल पड़ा–
बस! एक बार कहीं दिखाई ही पड़ जाये।
वह रहा! अब देखूंगा कि बचकर कहां जायेगा। जरा पास आने दो।
ओह! वह रहा तेजा। उसे जल्दी से बता दूं कि महाजन उसे क्रोध से भरा ढूंढ रहा है। ताकि वह अपनी सुरक्षा का उपाय कर ले।
जैसे ही छोटे निकट पहुंचा–
आओ-आओ छोटे! मैं कब से यहां खड़ा तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं। मुझे तुमसे एक बहुत जरूरी बात करनी है।
क्या बात हो सकती है?
बात तो मुझे भी करनी है। लेकिन पहले तुम ही कहो।
यह रही वह जरूरी बात!
ओह... मरा।
धाड़
तेजा का रौद्ररूप देखकर छोटे सिर पर पांव रखकर वहां से भागा–
उफ़! लगता है महाजन इसकी ठुकाई करके जा चुका है और अब ये उस ठुकाई-पिटाई का बदला मुझसे लेना चाहता है। जान बचानी है तो भागो यहां से।
आज तो पाताल तक भी तेरा पीछा नहीं छोड़ूंगा।

भागते-भागते छोटे, कलुआ धोबी के मकान में घुस गया-
कलुआ धोबी के मकान की छत के साथ – साथ कई छतें जुड़ी हुई हैं। एक के बाद एक कूदता हुआ मैं अपने घर की छत तक जा पहुंचूंगा...
... फिर यह कम्बख्त मुझे नहीं ढूंढ पायेगा। और सुबह तक तो ये रफूचक्कर हो ही जाने वाला है गांव से।

उधर जैसे ही छोटे सीढ़ियां चढ़कर कलुआ धोबी की छत पर पहुंचा-
हे भगवान! यह तेजा तो सामने खड़ा है। लगता है वह मेरी योजना को भांप गया है। अब तो सीढ़ियों तक जाने का भी समय नहीं है।
तेजा से तेजी नहीं चलेगी बच्चू! अब कहां भागेगा?

दूसरे ही क्षण छोटे ने छत से नीचे छलांग लगा दी-
अरे!

किन्तु इसका क्या करें कि उस दिन छोटे के सितारे ही गर्दिश में थे।
छपाक
गुलप

ओ...ह! यह मैं (गुलुप) कहां दलदल में आ फंसा। (गुलुप) यह तो मांड मालूम पड़ती है। ब्रू हू हू हू...

और तभी उसकी नजर अपनी तरफ भागकर आते तेजतर्रारसिंह पर पड़ी। उसे देखते ही वह मांड भरे बर्तन से उछला और सरपट एक तरफ भाग निकला—
ओह! फिर भाग निकला!

हे भगवान! इस भूत से मेरा पीछा छुड़ाओ। वरना मैं भागते-भागते ही दम तोड़ दूंगा। हम्फ... हम्फ...हम्फ

हड़बड़ी में वह फिर एक मकान में घुस गया और अंदर आते ही उसने द्वार बंद कर लिया—
भगवान करे, उस यमदूत की निगाहें मुझ पर न पड़ी हों। नहीं तो वह मार-मारकर जरूर मेरा कचूमर निकाल देगा।
तब तक संध्या भी हो चुकी थी।

यहां अंदर तो बहुत अंधेरा है। हाथ को हाथ सुझाई नहीं पड़ रहा। कहीं किसी वस्तु से टकराकर गिर न जाऊं!
और वही हुआ, जिसका डर था—
ओफ्फ!
अरे! यह तो रुई का ढेर मालूम पड़ता है। उफ़, मेरे सारे शरीर पर रुई चिपक गई है।
तभी दरवाजा जोरों से खटखटाया जाने लगा—
दरवाजा खोलो! कौन है भीतर! वरना दरवाजा तोड़ दूंगा।
? मर गए!

ठीक उसी पल छोटे का दिमाग काम कर गया–

वाह! यह युक्ति सही रहेगी। चाहे कुछ देर के लिये ही सही। मैं उस यमदूत से पीछा छुड़वा लूंगा।

दरवाजा खुल रहा है, होशियार!

मैं बिल्कुल तैयार हूं जैसे ही दरवाजा खुलेगा मैं लाठी से उस पर प्रहार करूंगा।

फिर एक झटके के साथ दरवाजा खुला और–

बूहू हू हू ह हा हा

ई ई ई

फिर जिसने भी उस रुई के दानव को देखा, वही चीखता-चिल्लाता हुआ नाक की सीध में भाग निकला–
म... म... भूत
ई ई ई बचाओ!

इसी आपाधापी में छा गए अंधकार का सहारा पाकर छोटे जब घर पहुंचा तो मोटे भी तबतक घर पहुंच चुका था–
खट खट
छोटे ही होगा।

लेकिन दरवाजा खोलते ही मोटे के कंठ से चीख निकल गई–
ई ई ई ई म..म.. भूत
उफ! अगर ये ऐसे ही चीखता-चिल्लाता रहा तो मेरी पोल खुलते देर न लगेगी और वह कम्बख्त तेजा भी इधर आ निकलेगा।

छोटे स्फूर्ति के साथ भीतर दाखिल हुआ फिर द्वार बंद करने के बाद जब वह पलटा–
अरे! मोटे कहां गया
मोटे... मेरे यार... यह मैं हूं... तुम्हारा यार छोटे ... कहां छिपे हो?

ओह! तो तुम यहां छिपे हो। घबराओ नहीं मैं कोई भूत-वूत नहीं हूं। मेरा यकीन करो। यह तो बस मेरे शरीर पर रुई चिपक गई है।
छ... छोटे???

तब कहीं जाकर मोटे चारपाई के नीचे से बाहर निकला और बोला–
यह तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है घोटे! आखिर ये चक्कर क्या है?
घोटे ने सारा किस्सा सुना दिया और स्नान की तैयारी करने लगा।
तब—
ओह! तो यह है सारा चक्कर! एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी! सच कहते हो यार! वह कहावत झूठी होती जा रही है कि सच्चे का बोलबाला।
अब तुम्ही बताओ! भला सच-सच सबकुछ महाजन को बताकर मैंने क्या बुरा काम कर दिया जो मुझे इतनी मुसीबतें झेलनी पड़ी हैं।
न जाने लोग कब सत्य की महिमा को समझेंगे। और अपने साथ-साथ देश को भी सुखी करेंगे।
... खैर छोड़ो अब इन सब बातों को। खाना तैयार है...खा लो। आराम की तानकर सो जाओ। सुबह की सुबह देखेंगे... आओ।
चलो! वैसे भी भागदौड़ से मेरी भूख दोगुनी हो गई है।
फिर खाना खाकर दोनों सो गए।
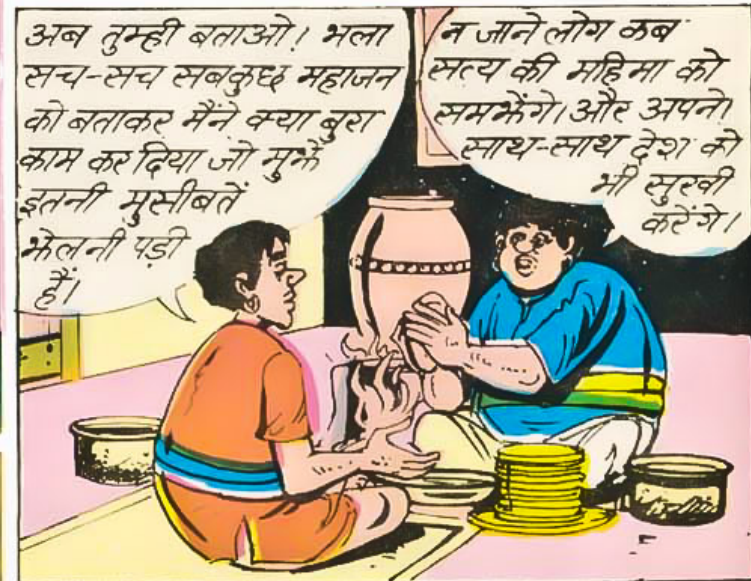
अगले दिन तक मोटे-छोटे का पड़ोसी तेजतर्रारसिंह गांव छोड़कर भागने में सफल हो गया था। उसका मकान खाली पड़ा था। यह देखकर छोटे ने चैन की सांस ली-

उसी रात गांव के बाहर एक पीपल के वृक्ष के नीचे-
अब तो हद हो गई है भाइयो! हैं भई हैं! मोटे-छोटे के कारण मेरा बड़ा नुकसान हो रहा है। कल तो तुम्हारे इस लाला का दिवाला निकलते-निकलते रह गया था।
कम्बख्त पूरे सत्यवादी की संतान हैं।
उनके कारण मैं अपनी ही जायदाद से वंचित कर दिया गया हूं।

उसमें तुम्हारी ही गलती थी लच्छू। तुमने ही अपने बापू के मरने की खुशी उनपर जाहिर करके दावत देने का न्योता दिया था।
हां दिया था। मेरी बुद्धि खराब हो गई थी। मुझे क्या मालूम था कि वे मेरी सारी पोल खोल देंगे कि मैं अपने बापू की मृत्यु पर दुखी होने की बजाये जायदाद मिलने से प्रसन्न हूं। और बस...

...मां ने यह सब सुनकर मुझे जायदाद से बेदखल कर दिया...
अब मैं इस सारी जायदाद को गरीबों में बांट दूंगी।
ओफ्फ!

...मैंने तभी तय कर लिया था कि... छोटे-मोटे को सबक सिखाकर ही रहूंगा।...

और अब वह समय आ गया है।
हुंअ! अगर ये दोनों गांव में रहते हैं तो कोई न कोई फसाद खड़ा करते ही रहेंगे हमारे लिए। इसलिये कोई ऐसी तरकीब निकालनी होगी कि सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।
तेजा ठीक कह रहा है।

ऐसी तरकीब सोचने के बाद ही मैंने तुम्हें यहां इकट्ठा किया है।
तरकीब क्या है?

गांव की सीमा से लगे पुराने खण्डहर।
पुराने खण्डहर? हैं भई हैं! लेकिन उसमें तो सुना है कि भूतों का डेरा है। जो भी वहां जाता है, लौटकर नहीं आता।
हमें किसी तरह उन दोनों नामुरादों को वहां भेजना है।

तुमने बिल्कुल ठीक सुना है लाला! हम भी तो यही चाहते हैं कि वे फिर कभी गांव न लौटें।
लेकिन...

लेकिन-वेकिन छोड़ो लाला। तरकीब अच्छी है। अगर वे बच भी गए तो शायद फिर कभी गांव का रुख नहीं करेंगे।

लेकिन हम उन्हें वहां भेजेंगे कैसे?

वे दोनों हर सुबह लकड़ियां काटने जंगल जाते हैं। कल सुबह जब वे लकड़ियां काटकर लौट रहे होंगे तब...
और लच्छू धीरे-धीरे उन्हें अपनी योजना समझाने लगा।

अगली सुबह-
आज लकड़ियां कुछ ज्यादा ही कट गई लगती हैं। वजन पहले से अधिक लग रहा है।
ठीक ही तो है। लकड़ियों का वजन बढ़ाते जाओ... तुम्हारा अपने आप घटता चला जायेगा। हे हे हे!

तुम्हें मजाक सूझ रहा है। जबकि मैं सोच रहा हूं कि काश, हमारे पूर्वज भी हमारे लिये कुछ धन व जमीन-जायदाद इत्यादि छोड़ गए होते तो आज हम भी चैन व सुख की बंसी बजा रहे होते। इस प्रकार लकड़ियां न काटते फिर रहे होते।
पर अपनी ऐसी किस्मत कहां?

दोनों इस प्रकार बातें करते हुए चले जा रहे थे कि तभी अचानक एक गुफा से निकलती कुछ आवाजों को सुनकर वे ठिठक कर रुक गए-
लेकिन यह कैसे हो सकता है। भला सोने-चांदी के भण्डार पाने के लिये हम जान को जोखिम में कैसे डाल सकते हैं?
जिन्दगी को सुखी व सम्पन्न बनाने के लिये जान का खतरा तो उठाना ही होगा। ऐसे ही खजाना थोड़े ही मिल जायेगा।
खजाना!!!

उस कागज में लिखे नक्शे के नीचे उस जमाने के राजा की शाही मुहर लगी हुई थी, जो बिल्कुल झूठी नहीं हो सकती। ऐसा लगता है जैसे राजा ने अपने आखिरी समय के युद्ध में यह सारा खजाना पुराने खंडहरों में छिपा दिया था ताकि अगर वह बच जाये तो फिर से उस खजाने का इस्तेमाल कर सके।

...वे वृक्ष के पीछे से बाहर निकले और...

आजा छोटे प्यारे! खुल गए भाग्य हमारे। देर से ही सही, आज भगवान के दरबार में हमारी प्रार्थना सुन ही ली गई।

अगर वह नक्शा हमारे हाथ लग गया तो सचमुच हमारे दिन फिर जायेंगे। और हमें हर रोज सुबह लकड़ियां काटने जंगल नहीं आना पड़ा करेगा।

...दोनों शीघ्रता से गुफा में समा गए गैर उस बोतल की तलाश में लग गए—

गुफा अधिक लम्बी नहीं है। नक्शे वाली बोतल यहीं कहीं होगी।

कुछ देर की तलाश के पश्चात अचानक मोटे प्रसन्नता से चीख उठा—
मिल गया... मिल गया, करोड़ों के खजाने का नक्शा!
क्या?
दोनों ने उत्साह में भर कर बोतल को ही तोड़ डाला और...
छनाक
...नक्शा निकाल लिया।
इस पर तो सचमुच शाही मुहर लगी हुई है।
हम इस खजाने से न केवल अपना ही बल्कि देश के बहुत से निर्धनों का भला करेंगे। अब हमें तुरन्त गांव चलना चाहिये।
??
कुछ आवश्यक वस्तुएं एकत्रित करने के बाद हम दोनों जाकर वह खजाना निकाल लायेंगे।
हुम्म!
फिर दोनों गांव की ओर चल पड़े।

गांव पहुंचकर–

राम-राम हरिया काका!

राम-राम भैया! आओ-आओ भई! कहो कैसे आना हुआ?

हरिया काका! हमें एक दिन के लिये तुम्हारे फावड़े और तसले चाहिएं।

...फावड़े और तसले तो तुम ले जाओ, लेकिन यह तो बताओ कि ये एकाएक तुम्हें फावड़े व तसले की क्या जरूरत आ पड़ी?

वो..क्या है काका कि...बात रहस्य की है। किसी से कहना नहीं। और झूठ तुम जानते ही हो कि हम बोल सकते नहीं।

और छोटे ने सारी हकीकत बताने के बाद कहा–

तुम चिन्ता मत करना तुम्हारा बुढ़ापा भी अब ईश्वर की कृपा से सुधर जायेगा।

वाह! खजाना???

?

छोटे-मोटे फावड़े व तसले लेकर वहां से चले गए। लेकिन—
खजाना? पुराने खण्डहर में खजाना है! और नक्शा मोटे के पास..वाह! मुझे इसी वक्त उस्ताद बिल्ला खां के पास चलकर उन्हें सारी बातें बता देनी चाहियें।
खजाना... खजाना... खजाना...
और फिर—
उस्ताद, जल्दी करो। वरना करोड़ों का खजाना हाथ से निकल जायेगा।
क्या बक रहा है बे पीलू! आज क्या सुबह-सुबह चढ़ा ली है?
पीलू ने हरिया काका के मकान पर कानों सुनी, आंखों देखी कह दी। तब—
वाह! अगर यह सच है तो वह खजाना केवल उस्ताद बिल्ला खां का है।
पर उस्ताद... खजाना पुराने खण्डहरों में है और वहां तो सुना है कि भूत रहते हैं।
चुप कर! अगर करोड़ों के खजाने को पाने के लिये उस्ताद को अपनी जान भी देनी पड़ी तो देगा। कम से कम अन्तिम समय में ही सही हम शानो-शौकत से तो मरेंगे।
अगर ऐसा हो गया उस्ताद तो तुम फिक्र मत करना। हम तुम्हारा जनाजा बड़ी धूमधाम से निकालेंगे।
उसके बाद वे चारों तुरन्त फावड़े-कुदालें लेकर पुराने खण्डहर की ओर चल पड़े—

देखते ही देखते खजाने वाली बात पूरे गांव में फैल गई। और जिसे देखो, वही तसले-फावड़े लिये पुराने खण्डहर की ओर दौड़ पड़ा-
खजाना!
खजाना?
खजाना??
खण्डहर में खजाना?
यहां तक कि गांव का मुखिया भी यह खबर सुनकर हतप्रभ हो उठा था।
जबकि उधर पुराने खण्डहरों के निकट-
यार मोटे! मेरा दिल घबरा रहा है। कहीं पुराने खण्डहर के भूतों ने हमें अपना नाश्ता बना डाला तो?
तू घबरा मत। हम आज तक सत्य के मार्ग पर चलते आए हैं। कोई भूत हमारा बाल भी बांका नहीं कर सकता है। तू ईश्वर का नाम लेकर चला चल राम भली करेंगे।
वे डरते-डरते खण्डहरों में पहुंचे और नक्शे के मुताबिक-
खण्डहर के नक्शे के मुताबिक खजाना इस चबूतरे के नीचे होना चाहिये।
हनुमान नाम जो गावे भूत-पिशाच निकट नहीं.. हां-हां... खुदाई शुरू करो।

दोनों ने उस स्थान पर खुदाई आरम्भ कर दी-
ठाऽऽक
ठक

और तभी पूरा गांव शोर मचाता वहां आता दिखाई दिया
खजाना
खजाना
अरे! यह पूरा गांव यहां कैसे आ पहुंचा?
लगता है हरिया काका ने बात फैला दी है। अब युक्ति से काम लेना होगा-अन्यथा खून-खराबे की नौबत आ जायेगी।

जैसे ही भीड़ वहां पहुंची, मोटे ने कहा-
आप सब लोग भी खजाने की खुदाई में हमारा साथ देंगे। यह बड़ी खुशी की बात है। नक्शे के मुताबिक खण्डहर के इस पूरे हिस्से में ही कहीं खजाना है। चलो, खुदाई आरम्भ करो।
और इस पूरे हिस्से का पूरा खजाना उस्ताद बिल्ला खां का होगा हा हा हा

मोटे का इशारा पाते ही गांव के सभी लोग खण्डहर के चप्पे-चप्पे पर खुदाई करने लगे।
अहा! अगर ये खजाना मिल गया तो हमारे दिन फिर जायेंगे।
मेरी आंखें ढेरों खजाने के दर्शन पाने के लिये बेचैन हो रही हैं कहां छिपा है रे तू खजाने?
वाकई ही यह दौलत बुरी बला है।

अभी यह खुदाई चल ही रही थी कि तभी-
ब हू हू हा हा हा
ई ई
भ... भ... भूत ??
भागो!

भाग जाओ! वरना सब मारे जाओगे। हा हा हा...
भागो!
हा हा हा!
पलक झपकते ही लोग खण्डहर से बाहर निकल गए।

यह देख छोटे भयभीत स्वर में चिल्लाया-
भागो मोटे यार। वरना ये भूत हमारा कीमा बनाकर चट कर जायेंगे।
??
तभी उनमें से एक भूत भयानक रूप में ठहाका लगाकर बोला-
हा हा हा
तुम दोनों को अपनी जान प्यारी नहीं है क्या मूर्खों? भाग जाओ यहां से।
मोटे यार! अब भी समय है। भाग ले वरना ये भूत हमें जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।
नहीं, मैं इतनी आसानी से नहीं भागने वाला। इस खण्डहर में दबा खजाना लेकर ही यहां से जाऊंगा।
...यह खजाना हमारे पूरे गांव की किस्मत पलट देगा और अगर गांव की भलाई के लिये मेरे प्राण भी चले जायें तो मुझे कोई गम नहीं।
हां, अगर तुम्हें इन भूतों से डर लग रहा है तो तुम अपनी जान बचाने के लिये भाग सकते हो।
???
यह तू कैसी बातें कर रहा है मोटे। जब जिये साथ-साथ हैं तो मरेंगे भी साथ-साथ। चल आ खुदाई शुरू करते हैं।

भूतों के गायब होते ही दोनों निर्भीक भाव से उस चबूतरे की खुदाई करने लगे। कुछ ही देर बाद—
घड़ड़ घड़ड़
अरे! यह चबूतरा तो नीचे बैठ गया। इसका मतलब कि खजाने तक पहुंचने का रास्ता यही है।
चलो! अब भीतर चलते हैं।

दोनों उस चबूतरे में प्रवेश कर गए। भीतर अंधेरा देखकर मोटे ने मशाल प्रज्वलित कर ली।

यह रास्ता तो और आगे जा रहा है।
शायद इस गुफा की समाप्ति पर ही खजाना होगा। चलते रहो।

दोनों सावधानी पूर्वक उस गुफा में आगे बढ़ते गये। फिर गुफा की समाप्ति पर एकाएक ही मोटे-छोटे प्रसन्नता से चीख उठे—
ख...खजाना? वह रहा खजाना!

इतना ढेर सारा खजाना देखकर दोनों की आंखें चुंधियां गईं—
हे भगवान! यह खजाना हमारे गांव तो क्या पूरे नगर की काया-कल्प कर देगा।
तुम ठीक कहते हो मोटे भैया! लेकिन गांव वालों को अभी इस खजाने का पता न चले अन्यथा खजाने को पाने के के लिए सभी आपस में लड़ मरेंगे। पहले खजाना मिलने की सूचना हमें राजा को दे देनी चाहिये।

तुम ठीक कहते हो, आओ चलें।
??
चलो!

तभी—
हा हा हा! अब तुम दोनों कभी इस गुफा से बाहर नहीं निकल पाओगे।
और यह सारा खजाना हम तीनों आपस में बांट लेंगे! हा हा हा!

खतरे को भांपते ही एकाएक मोटे का दिमाग तेजी के साथ चलने लगा। अगले ही पल वह उन तीनों के पीछे की ओर संकेत करके चीख पड़ा—
ब...ब...बचो! भ..भू...भूत!
भूत ???

भूत का नाम सुनते ही तीनों बुरी तरह से उछलकर पलटे और यह देख मोटे ने छोटे को आंखों ही आंखों में कोई संकेत किया और अगले ही पल-
जय बजरंग बली!
तोड़ दे दुश्मन की नली!

मोटे और छोटे ने जमकर तीनों की पिटाई की-
आ...ह
ओफ्फ

पकड़ो उन्हें!
भाग! छोटे!
हाय! वे दोनों भाग गए...

दोनों द्रुतगति से भागते हुए चबूतरे तक पहुंच गए-
उफ़!
जल्दी कर मोटे! वरना कहीं वे लोग फिर से यहां न आ पहुंचे।

समाप्त:

मुद्रक – के सी प्रिन्टिंग एन्ड ए. ईन्ड न. दे-110 020